International Journal of Sanskrit Research 2016; 2(3): 25-26

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2016; 2(3): 25-26
© 2016 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 20-03-2016
Accepted: 21-04-2016

एम. रघुनाथ
शोधार्थी, काकतीया विश्वविद्यालय,
वरंगल, तेलंगाना–506013

Correspondence
एम. रघुनाथ
शोधार्थी, काकतीया विश्वविद्यालय,
वरंगल, तेलंगाना–506013

समकालीन हिंदी उपन्यासों की प्रवृत्तियाँ – नारी जीवन

एम. रघुनाथ

समकालीनता पर विचार करते ही जो प्रश्न सामने आते हैं वह निम्न हैं क्या समकालीन और आधुनिक में कोई अंतर है ? क्या ये दोनों समानांतर, समानार्थक शब्द हैं ? इन प्रश्नों का समाधान यह है कि 'समकालीन' शब्द कालबोधक है। दूसरा 'आधुनिक' शब्द कालबोधक के अलावा मूल्यबोधक भी है। अतः समकालीनता का संबंध साहित्यकार व रचनाकार के समय का समकाल व समानांतर काल के जीवन और सामाजिक साहित्य को इंगित करता है। जब कि आधुनिक से समकालीन का बोध तो होता है पर उसके आगे उस शब्द का एक अलग विशिष्ट व निजी अर्थ सामने आता है। "अर्थ के इस मूल्यबोधी स्तर पर आधुनिकता इतिहास चक्र को दुततर गति से चलाने का सजग उपक्रम है।"[1]
स्टीफन स्पेंडर ने 'दी स्ट्रगल आफ दी मार्डन' में समकालीनता पर विचार करते हुए लिखा है कि "आज बीसवीं शताब्दी के लेखकों में कुछ तो समकालीन (Contemporary) है और कुछ सचमुच मॉडर्न (Modern) है–नये। स्पेंडर ने समकालीनों के लक्षण बताते हुए लिखा कि ये आधुनिक संसार के होते हैं जिसे वे अपनी कृतियों में अभिव्यक्त करते तथा उस ऐतिहासिक ऊर्जा को स्वीकार करते हैं जो आधुनिक युग के वैज्ञानिक मूल्यों और विकास से गुजरते हैं।"[2]
समकालीन शब्द हिंदी में अंग्रेजी के 'कांटेम्परेरी' का पर्याय है। जिसका कोशीय अर्थ "एक ही समय का, अपने समय का, या समयस्का"[3] डॉ. रवीद्र भ्रमर ने समकालीनता के तीन अर्थ बतलाए हैं– "1. कालविशेष से संबद्ध। 2. व्यक्ति विशेष के काल–यापन से संबद्ध। 3. साहित्य समाज अथवा प्रवृत्ति विशेष से संबंधित संश्लिष्ट कालखंड।"[4] डॉ. विश्वंभर नाथ उपाध्याय अपनी पुस्तक 'समकालीन कहानी की भूमिका' में समकालीन शब्द की व्याख्या करते हुए लिखते हैं– "समकाल शब्द यह बताता है कि काल के इस प्रचलित खंड या प्रवाह मे मनुष्य की स्थिति क्या है। इसे उलटकर कहे तो कहेंगे, कि मनुष्य की वास्तविक स्थिति देखकर या उसे अंकित–चित्रित करते ही हम समाकलीनता की अवधारणा को समझ सकते हैं। शर्त यही है कि लेखक आज के मनुष्य (देशकाल–स्थिति) के अंकन में वस्तुगत रहे, यानि उसके चित्रण की विधि कोई भी हो लेकिन उससे जो मानव बिंब उभरता हो, वह वास्तविक जीवन के निकट हो।"[5] अतः इसे विस्तुत अर्थ में समझाया जाए तो यह अपने समय या काल की समस्याओं का समाना करना है। विस्तृत विसंगतियों एवं चुनौतियों में भी विशेष महत्व को दर्शाने वाली समस्याओं का स्पष्टीकरण ही समकालीनता को उत्पन्न करता है।
साठोत्तर हिंदी उपन्यासों में जो परिवर्तन परिलक्षित होते हैं, वही उसकी लोकप्रियता, विकास का प्रमुख कारण है। पूर्ववर्ती लेखकों की अपेक्षा इन उपन्यासकारों ने मौलिकता को अधिक प्रदर्शित किया। अतः इस काल के उपन्यास फायड़, एड़लर और युंग के मनोविश्लेषण से प्रभावित है। इन उपन्यासों के पात्रों में दमित इच्छाओं और मनःस्थिति को अधिकाधिक परिभाषित किया है। "साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों में व्यक्ति की निजता को उसकी आत्मकेंद्रित मनोवृत्तियों के परिप्रेत्य में अधिक गहराई से अंकित किया गया है। आज का उपन्यासकार आदर्शवादी दृष्टि के स्थान पर यथार्थवादी तथा आध्यात्मिकता के स्थान पर भौतिकवादी दृष्टि अपनाने के लिए विवश है, क्योंकि इसके अभाव में वह समाज का सही रूप प्रस्तुत नहीं कर सकता। इस कारण इसमें मानव मन की विभिन्न अनुभूतियाँ प्रतिक्रियाएँ और संवेदनाएँ कथानक का आधार बनी।"[6]
साठोत्तर उपन्यास साहित्य अतीत के सभी बंधनों से मुक्त हो गया है। इसमें सामाजिक समस्याओं, वैयक्तिक और वास्तविक अनुभूतियों का तथा आंचलिक जीवन के रंग को कथानक का विषय बनाया। अतः तत्कालीन उपन्यास अपने युग की वास्तविक प्रवृत्तियों से संबद्ध हो गया।
"1981 & 2000 की अवधि को 'समकालीन' परिदृश्य मानना विवादास्पद हो सकता है, पर विवेचन की सुविधा की दृष्टि से इसका कोई विकल्प भी नहीं है। इस परिच्छेद में हमने उन उपन्यासकारों का विवेचन करने का निर्णय किया है, जिनका पहला उपन्यास 1981 ई. में या उसके बाद प्रकाशित हुआ। यद्यपि इस वर्ष को समकालीनता का आरंभ मानने का कोई निर्विवाद औचित्य नहीं है। पर समय की कोई न कोई रेखा तो हमें निर्धारित करनी ही होगी, जहाँ से समकालीनता का आरंभ माना जा

सके।"[7] समकालीन उपन्यासकारों में अच्छी शुरूआत के बावजूद अपनी रचनात्मकता को निरंतर जारी रखने में असमर्थ सिद्ध हुए हैं। पर आने वाले समय में यह अपनी कलात्मक शैली का परिचय दे सकेंगे। क्योंकि पिछले दशकों के उपन्यासकारों में जो रचनात्मकता एवं कलात्मक प्रतिभा दिखाई देती है। वह इनमें भी उभरने की संभावनाएं हैं।

समकालीन हिंदी उपन्यासकारों ने अपने साहित्य में नग्न यथार्थ, नारी विमर्श एवं दलित विमर्श जैसे ज्वलंत विषयों को प्रधानता दी। वहीं उनके उपन्यास सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, ग्रामीण एवं धार्मिक जीवन से जुड़ी समस्याओं का चित्रण करते हैं।

नारी जीवनः स्वतंत्रतापूर्व भारत में नारी को पुरूष की प्रप्ति, संपत्ति समझा जाता था। परन्परागत ढंग से विवाह अथवा माता–पिता द्वारा आयोजित विवाह नारी की वैवाहिक स्वतंत्रता में सर्वाधिक बाधक और समस्या से घिरे पाये जाते हैं। समकालीन उपन्यास में नारी जीवन का वैवाहित पक्ष से स्पष्ट होता है कि उसका वैवाहित जीवन असफल बना हुआ ही दिखायी देता है। उपन्यास में नारी का प्रेम विवाह माता–पिता द्वारा तय किया गया स्वेच्छा विवाह आदि प्रकार से विवाह हुआ दिखाई देता है। विवाह किसी भी प्रकार से हुआ हो लेकिन वैवाहिक जीवन में सुख–शांति का अभाव दिखाई देता है।

'कंस्तूरी कुंडत बसै' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा विवाह समस्या का सुन्दर वर्णन किया है। कस्तूरी मैत्रेयी का विवाह सिर्कुरा गाँव में करना चाहती थी लेकिन गाँव का रास्ता कच्चा या और बारिश सी हो रही थी जिससे कस्तूरी परेशान हो जाती है।

अपने सामाजिक अधिकारों एवं कर्त्तव्यों के प्रति आज की शिक्षित नारियाँ जागरूक हैं। वे अपने आपको घर माँ तथा पत्नी रूपी बंधन में बंधना उचित नहीं समझती। हाँ ऐसी भी धारणा उनमें नहीं है कि वे अपने परिवार बाल–बच्चे, पति एवं घर जैसे कर्त्तव्यों की उपेक्षा कर पूरी तरह से महत्वांकाक्षी बनें। इतना जरूर है कि आज के वातावरण में वे अपने स्वभाविक गुणों के विकास के साथ समाज में भी सक्रिय रूप से पुरूष वर्ग की बराबरी करना चाहती है।

'विजन' उपन्यास में उपन्सकार मैत्रेयी पुष्पा ने नेहा के माध्यम से मध्यम परिवार का चित्रण किया है। प्रतिभाशाली नेत्रसर्जन के रूप में प्रतिद्वि पाने की कामना रखने वाली योग्य मध्यम परिवार की नेहा के लिये जब आगरा शहर के नेत्र विशेषज्ञ डॉक्टर अजय का रिश्ता आता है तो वह विवाह करने से इन्कार कर देती है। नेहा सोचती है कि उसके पिता ने अपने जीवन में कभी चमत्कार होते नहीं देखा था, इस समय उन्हें अपना क्वार्टर सोने के महल में बदला हुआ दिखाई देने लगा, क्योंकि दौलत का मालिक डॉक्टर शरण सामने बैठा था। डॉक्टर आर. पी. शरण अजम के लिये कई लड़कियाँ देखी किन्तु उन्हें पसन्द नहीं आयी। लेकिन नेहा अभी विवाह नहीं करना चाहती थी। इसलिए वह अस्मंजस की स्थिति में आ जाती है। वह अपनी सेनियर आभा दी को याद करती थी। आभा उसे समझाती है कि "तुम जानती हो नेहा जो लड़का तुम्हें अपनी ओर आकर्षित कर रहा है कल उसी झटके से अलग कर देगा, क्योंकि उस के अट्रेक्शन के खिंचाव को उसका कुटुम्ब सह नहीं पायेगा। और उस परिवार का बेटा अपने भूले हुये कर्तव्यों को याद करके घरवालों को सुरबी बनाना अपना एकमात्र लक्ष्य बना लेगा।"[8]

"कस्तूरी कुष्डल बसै" उपन्यास में प्रतिकूल पिरिस्थितियों में भी सशक्तिकरण के उदाहरण देने को तैयार कस्तूरी और मैत्रेयी जी का जीवन मूल्य पाठक वर्ग के सामने उपस्थित होता है। कस्तूरी की भरी देह देखकर माता का मन सूखे डंठल सा कांपता है। कस्तूरी के विवाह के पीछे एक पडयंत्र चल रहा था कि कस्तूरी से चालीस वर्षीय आदमी ब्याह करना चाहता है। उसके बदले में वह अपनी बहन को कस्तूरी के भाई हेमराज को देकर विवाह करना चाहता है। कस्तूरी की माता पुत्री से ज्यादा महत्व पुत्र को देती है। पुत्र को अधिक प्रधानता देते हुये कस्तूरी का जीवन को खतरे में डाल रही है।

कस्तूरी की विवाह की समस्या परिवारजनों के बीच में मन ही मन संघर्ष उत्पन्न करती है। माँ तो कस्तूरी को समझाकर गयी थी, अब उस की भाभी समझाने लगी कि लड़की के जीवन में विवाह की आवश्यकता क्या है ? भाभी कस्तूरी की पढ़ाई से ध्यान को हटाकर व्यक्तिगत जीवन की ओर खींचने के लिए भरसक प्रयत्न करना चाहती है। कस्तूरी को समझाते हुये कहती हैं– "लाली किताबों में क्या पढ़ती हो ? उनमें यही लिखा है कि जिन्दगी अनब्याहे ही काट दो और भारी सिल की तरह भइया की छाती पर लदी रहो। बेटी को यही मच्छा होता है कि वह उम्र आते ही ससुराल चली जाय।"[9] कस्तूरी भी कुछ दिनों के बाद सोचकर विवाह बंधन में बंधने को राजी हुई। कस्तूरी सोलह साल की लड़की है।

सरकारी लगान भरना था। जमींदार को नजराना देते तो मियाद बढ़ जाती। इज्जत भी बच जाती। लेकिन देने के लिए घर में कुछ नहीं था। कस्तूरी की नजर पढ़ैली पर रखे कलशियों पर पड़ी। उन कलशियों को बेचने के लिए वह बनिए के पास जाती है। वहाँ पर उसने एक ऊँचे कदवाला रूपवान् उजले रंगवाला, तराशी हुई मूछों वाला एक आदमी देखती है। उसके गाढ़े कमीज से वह रईस लग रहा था। कलशियों से उसको अठन्नी मिलती है। बाद में वह आदमी आठ सौ चाँदी के सिक्के देकर कस्तूरी को खरीद लेता है। कस्तूरी के पति हीरालाल स्वभाव से कट्टर अपने घर के प्रति गैर, जिम्मेदार थे। कस्तूरी का दुर्भाग्य था कि हीरालाल एक दिन मोतीझला बीमारी से पीड़ित होकर मृत्यू को प्राप्त करते हैं। तब कस्तूरी की गोद में अठारह महीने की बच्ची रहती है। पति की इच्छानूसार पुत्री का नाम मैत्रीम रखा गया। कस्तूरी पति की मृत्यू से विचलित न होकर जीवन का संघर्ष करने को तैयार हो जाती है। कस्तूरी के माध्यम से लेखिका नारी जीवन के बदलते नैतिक मूल्य को चित्रित करती हैं।

संदर्भ सूची

1. डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, समकालीन हिंदी साहित्य विविध परिदृश्य– पृ. भूमिका (IX)
2. डॉ. बेचन, समकालीन साहित्य और समीक्षा – पृ. 26
3. फादर फामिल बुल्के, अंग्रेजी हिंदी कोश –पृ. 134
4. डॉ. रवींद्र भ्रमर, समकालीन हिंदी कविता –पृ. 19
5. डॉ. विश्वभरनाथ उपाध्याय, समकालीन कहानी की भूमिका – पृ. 2
6. डॉ. दिलशाह जीलानी : साठोत्तरी हिंदी के मुस्तिलम उपन्यासकार – पृ. 83
7. गोपाल राय, हिंदी उपन्यास का इतिहास – पृ. 375
8. विजन – मैत्रेयी पुष्पा
9. कस्तूरी कुष्डल बसै मैत्रीम पुठपा पृ. 69